चिकनकारी से चमकेगा अवध, बस दम दिखाना होगा

चुनावी माहौल में राजनीतिक इच्छाशक्ति पर चिकन उद्योग की नजर

रोली खन्ना

लखनऊ। चुनावी माहौल में चलिए कुछ बात लखनवी नफासत की भी हो जाए। यहां चिकन दस्तरखान पर परोसा भी जाता है और पहना भी जाता है। पद्मश्री योगेश प्रवीण जब लखनऊ के किस्से सुनाते तो कहा करते थे कि यह शहर चिकन के करिश्मे सजाए बदन की तरह है। देश हो या विदेश, ईद मनाए यां होली, बिना चिकन का कुर्ता पहने कहां मनती है। इसी तरह चाहे सेलिब्रिटी आएं या फिर आम पर्यटक, लखनऊ आना है तो चिकन के कपड़े तो लेकर ही जाना है। यह विडंबना देखिए कि चिकन को कपड़ों पर उकेरने में सुई की हजारों-हजार बार चुभन झेलने वाले राजधानी के लगभग पांच लाख कारीगर, चिकन कारोबार से जुड़े 3500-4000 से अधिक कारोबारी, इस व्यवसाय से कहीं न कहीं नाखुश से हैं।

चुनावी माहौल में जब बातें लाभ-हानि, विकास-कारोबार के दावों और वादों की हो रही है ऐसे में इनकी

उम्मीदें भी जिंदा हो उठी हैं। कारोबारी हो या कारीगर, सभी आस लगाए बैठे हैं कि वाराणसी के बुनकरों को जिस तरह से बेहतर नेतृत्व का लाभ मिला, उसी तरह चिकन कारोबार के हालात भी सुधरेंगे। इस दिशा में सभी राजनीतिक इच्छाशक्ति का दम देखने को ललायित हैं।

ओडीओपी तो श्रेष्ठ, ब्रांडिंग होना शेष

चिकन हैंडीक्राफ्ट एसोसिएशन के पदाधिकारियों का कहना है कि लखनऊ के 100 किमी की परिधि में कारीगरों की संख्या पांच लाख के करीब है। इनमें रंगाई, कढ़ाई, सिलाई, छपाई वाले शामिल हैं। जीएसटी के तहत देखें तो 40 लाख रुपये सालाना से कम वाले चिकन कारोबारियों की संख्या 3500 से 4000 के बीच है।

- कारोबारी संजीव अग्रवाल के मुताबिक, एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) के तहत इसे पहचान तो दे दी गई, लेकिन ब्रांडिंग अभी भी कम है। इसी तरह मशीन का काम हावी हो रहा है। वह लोगों को सस्ता पड़ता है। एचएसएन कोड की लड़ाई हम लोगों ने लड़ी थी। इसमें कुछ राजनीतिक सहयोग मिला था।

दस वर्ष में दोगुना कारोबार : दस साल पहले यानी 2014 में चिकन कारोबार एक हजार करोड़ रुपये के आसपास था। 2024 तक पहुंचते-पहुंचते इसमें दोगुनी वृद्धि हुई और आज यह दो हजार करोड़ के पास पहुंच गया है। हालांकि कारीगरों के नजरिए से देखें तो उनके हाल में कोई सुधार नहीं हुआ है। बड़ी संख्या में कारीगर मजदूरों जैसा जीवनयापन कर रहे हैं।